रोपण

अपर्णा भट्ट*

दिल की क्यारी में
एक नन्हा पौधा उगाया है,
कभी खून, कभी दूध
कभी आंसू से सींचकर,
उस पौधे को पेड़ बनाने का
बीड़ा उठाया है।

उस नन्हीं-सी जान को
ठोस जमीन और खुला आसमान दूँ,
शांत सहनशक्ति
मूक बलिदान की मिसाल नहीं,
उसके लिए एक विकराल योद्धा का उदाहरण बनूँ।

पोषण करूँ अंतर्मन का
प्यार के जल, पराक्रम की धूप
और विश्वास की खाद से,
अस्तित्व के तने में
आत्मनिष्ठा की शाखाओं पर
संवेदना और समझदारी के फूलों को महकाऊँ।

हवा का विरोध कभी
कभी हंसता सावन,
मोहक वसंत की बहार कभी
कभी निराश पतझड़ की बेरुखी,
जीवन के हर मौसम के लिए
उसे तैयार रखूँ।

कभी ढाल तो कभी सारथी बनूँ,
उसके जीवन की जड़ों को मजबूत करूँ,
उस नन्हीं सी जान को
खुल कर पनपने दूँ।

दिल की क्यारी में
एक नन्हा पौधा उगाया है,
कभी खून, कभी दूध
कभी आंसू से सींचकर,
उस पौधे को पेड़ बनाने का
बीड़ा उठाया है।

*****

* नैनीताल, उत्तराखंड।